भारत में पशुधन रोगों का सामाजिक–अर्थशास्त्र

कमल कुमार[१] एवं ललिता गर्ग[२]

[१]विस्तार शिक्षा विभाग, भाकृअनुप–आईवीआरआई, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश २४३१२२.

[२]पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी प्रभाग, भाकृअनुप–आईवीआरआई, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश २४३१२२.

ईमेल: kamalvet1995@gmail-com

पशुधन क्षेत्र भारत की ग्रामीण आबादी के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उद्यम आवश्यक खाद्य उत्पादों, मसौदा शक्ति, खाद, रोजगार, आय और निर्यात आय का प्रवाह प्रदान करता है। चूंकि यह गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण घटक है, प्राथमिक और माध्यमिक उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र पर निरंतर जोर दिया जा रहा है, जो बदले में बेहतर उत्पादों के लिए सुरक्षित पशु स्वास्थ्य की मांग करता है। इसलिए, पशुधन विकास कार्यक्रम तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि एक सुव्यवस्थित पशु स्वास्थ्य सेवा का निर्माण नहीं किया जाता है और पशुओं को बीमारियों और कीटों से विशेष रूप से घातक संक्रमणों से सुरक्षा का आश्वासन नहीं दिया जाता है।

भारत ने रिंडरपेस्ट (आरपी), संक्रामक बोवाइन प्लुरो न्यूमोनिया (सीबीपीपी), एएचएस और ड्यूरिन का उन्मूलन हासिल कर लिया है। हालांकि, देश में कई अन्य संक्रामक और गैर–संक्रामक रोग प्रचलित हैं, जिससे सालाना भारी आर्थिक नुकसान होता है। पशु रोगों की रोकथाम, नियंत्रण और उन्मूलन के लिए महामारी विज्ञान के साथ–साथ उनके आर्थिक प्रभाव की गहन समझ की आवश्यकता है। रोग की घटनाओं या प्रकोप की प्रारंभिक चेतावनी और नए क्षेत्रों में फैलने के जोखिम की भविष्यवाणी की क्षमता महामारी पशु रोगों के प्रभावी नियंत्रण और नियंत्रण के लिए एक आवश्यक पूर्व–आवश्यकता है।

जुगाली करने वालों में रुग्णता और मृत्यु दर के कारण सामाजिक–आर्थिक नुकसान को कम करने के लिए टीकाकरण को एक महत्वपूर्ण रणनीति के रूप में माना जाता है। यह भारत जैसे विकासशील देशों में अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि, विकसित देशों में वाणिज्यिक खेती के विपरीत, पशुधन खेती निर्वाह प्रकार की होती है।

विभिन्न रोगों के कारण आर्थिक नुकसान

भारत में प्रचलित प्रमुख पशु रोग पैर और मुंह रोग (एफएमडी), रक्तस्रावी सेप्टीसीमिया (एचएस), पेस्ट डेस पेटिट्स रुमिनेंट्स (पीपीआर), ब्रुसेलोसिस, एंथ्रेक्स, रेबीज, ग्लैंडर्स, अत्यधिक रोगजनक एवियन इन्फ्लुएंजा और न्यू कैसल रोग (एनसीडी) आदि हैं। जनवरी 2016–दिसंबर 2016 की अवधि के दौरान, भारत में इन बीमारियों के कुल 749 प्रकोप थे। फुट एंड माउथ डिजीज से सालाना 12000–14000 करोड़ का आर्थिक नुकसान होता है। एचएस के कारण आर्थिक नुकसान रु 3755.95/पशु। जहां तक भैंसों की बात है तो इसकी कीमत रु. 4262.57/भैंस, जबकि मवेशियों के लिए यह रु. 5583/मवेशी। पीपीआर के कारण अनुमानित वार्षिक आर्थिक नुकसान रु. 8895.12 करोड़, जिसमें से रु. 5477.48 करोड़ बकरियों में और रु। भेड़ में 3417.64 करोड़। मवेशियों में एंथ्रेक्स से सालाना 18.94 लाख का आर्थिक नुकसान होता है। ब्रुसेलोसिस से भारतीय पशुधन में लगभग 3.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय पशु रोग रिपोर्टिंग प्रणाली (एनएडीआरएस) को इस उद्देश्य से मजबूत करने की आवश्यकता है कि बीमारी के प्रकोप की रिपोर्टिंग वास्तविक समय के आधार पर हो सके। एक अन्य हस्तक्षेप सभी वैक्सीन–रोकथाम योग्य बीमारियों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम का प्रशासन हो सकता है, जो पशुधन की सभी अतिसंवेदनशील प्रजातियों को लक्षित करता है। भारत सरकार ने पशुओं में एफएमडी और ब्रुसेलोसिस को नियंत्रित करने के लिए एक राष्ट्रीय एनिमा रोग नियंत्रण कार्यक्रम भी शुरू किया है।